Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 21/01/2020 Accepted on : 02/02/2020 Publication Date: 28/02/2020

अध्यापक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में इन्टर्नशिप : सतही समस्याएँ एवं समाधान

डॉ. दिब्या राय
असिस्टेंट प्रोफेसर, श्री मुरलीधर भागवतलाल महाविद्यालय, कुशीनगर, (उ.प्र.)
इमेलः drai8158@gmail.com

सारांश : *प्रत्येक व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थियों को नवीन ज्ञानयुक्त एवं व्यावसायिक दक्षताओं के उच्चतम स्तर पर पहुँचाने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। व्यवसाय विशिष्ट योग्यताओं व विशेषताओं को विद्यार्थियों में विकसित करने के लिए विश्वविद्यालयों एवं व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों के द्वारा समय–समय पर विभिन्न प्रकार के एवं विशिष्ट नवाचार से युक्त कार्यक्रमों का संचालन किया जाता रहा है, जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान व दक्षता में निरंतर वृद्धि एवं नवीनता आती रहे तथा विशिष्ट व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम समीचीन व अद्यतन होते रहें। ऐसे ही विशिष्ट कार्यक्रम के रूप में* ***'इन्टर्नशिप' (Internship) कार्यक्रम'*** *भी व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों में एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ सम्मिलित किया गया है। इन्टर्नशिप का प्रत्यय मात्र प्रशिक्षुओं (Interns) से ही संबंधित नहीं है बल्कि यह व्यावसायिक संस्थानों, सहयोगी प्रतिष्ठानों, नियोक्ताओं, अध्यापकों, सहयोगी पर्यवेक्षकों तथा व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों का एक सम्मिलित प्रयास होता है। इण्टर्नशिप को एक के बाद एक विभिन्न व्यावसायिक कार्यक्रमों का अंग बनाया गया। अन्य सभी व्यावसायिक क्षेत्रों में इन्टर्नशिप कार्यक्रम की प्रभावकता को देखते हुए इसे अध्यापक शिक्षा में भी कुछ विशिष्ट उद्देश्यों के साथ एक अभिन्न घटक के रूप में सम्मिलित किया गया। अध्यापक शिक्षा में इण्टर्नशिप कार्यक्रम के नवागत होते हुए भी इसके निर्धारित उद्देश्यों को काफी हद तक परिपूर्ण करने का प्रयास अध्यापक शिक्षा संस्थानों द्वारा किया भी जा रहा। किन्तु साथ ही इस कार्यक्रम से संबंधित मुद्दे भी उभरकर सामने आ रहे हैं जैसे– इण्टर्नशिप कार्यक्रम की समयावधि, संस्थानों में इसके संचालन का स्वरूप, वैतनिक/अवैतनिक होना, मेंटर शिक्षकों/निरीक्षकों द्वारा प्राप्त होने वाला निर्देशन, प्रशिक्षुओं के भावी पेशे पर पड़ने वाला प्रभाव, इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में आने वाली समस्याएँ एवं इण्टर्नशिप अभ्यास संस्थानों में प्रशिक्षुओं को प्रदान किये जाने वाले अवसर एवं सुविधाएँ आदि ।*

मुख्य शब्द : *व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम, अध्यापक शिक्षा, इण्टर्नशिप, प्रशिक्षु , समस्याएँ, समाधान*

१ प्रस्तावना :

व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों की प्रकृति, उद्देश्य, विषयवस्तु, संरचना, समयावधि व कार्यप्रणाली अन्य अकादमिक शिक्षा कार्यक्रमों से भिन्न एवं विशिष्ट होती है। व्यावसायिक शिक्षा न केवल अकादमिक शिक्षा कार्यक्रमों से भिन्न होती है अपितु प्रत्येक व्यावसायिक शिक्षा भी भिन्न–भिन्न प्रकृति की होती है। सभी व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम अलग–अलग प्रकार से अपने पाठ्यक्रमों का निर्धारण एवं क्रियान्वयन करते हैं। व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम अपनी न्यूनतम प्रवेश अहर्ताओं, प्रवेश प्रक्रिया के साथ ही शिक्षण अधिगम हेतु उपलब्ध संसाधनों, सामाजिक मूल्य व आर्थिक प्रदेयता मूल्य में भिन्न–भिन्न होते हैं। चूँकि व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम अपने सम्भागियों को न केवल प्रचलित ज्ञान को उपयोग में लाने हेतु तैयार करते हैं वरन् व्यावसायिक कार्यक्षेत्र में उन्हें आवश्यकतानुसार नये ज्ञान के सृजक, नवाचारों के उद्भवन हेतु प्रणेता, क्षेत्रगत भावी आवश्यकताओं व बदलती व्यावसायिक मांगों के प्रति सजग तथा अपने अनुभवों से निरंतर सीखने की योग्यता रखने वाले विमर्शक के रूप में भी विकसित होने के अधिगम अनुभव प्रदान करते हैं। किसी भी व्यावसायिक शिक्षा में इण्टर्नशिप कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए एक उपयोगी एवं लाभकारी घटक है। विद्यार्थी सीखने की अवस्था में होता है एवं जो ज्ञान वह सीख रहा है उसी ज्ञान को वह कार्यस्थल पर जाकर लागू करता है। इण्टर्नशिप कार्यक्रम अनुभवात्मक अधिगम (Experiential learning) का एक रूप है जो अध्ययेता द्वारा अभ्यासित ज्ञान व कौशल का वास्तविक व्यावसायिक क्षेत्र में उपयोग एवं विकास को समाहित किये हुए है। साथ ही व्यावसायिक कार्यक्षेत्रों के वास्तविक अनुभव, प्रक्रियाओं की समझ एवं घटकों की जटिलता से प्रशिक्षुओं को परिचित कराता है। इससे प्रशिक्षुओं में कार्यकुशलता, समायोजन क्षमता, विचार एवं निर्णयन योग्यता उत्कृष्ट स्तर पर विकसित होने में मदद मिलती है। साथ ही अनेक स्वगुणों जैसे पहल प्रवृत्ति; जोखिम उठाना, आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान में भी वृद्धि होती है।

२ अध्यापक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में इन्टर्नशिप :

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम एक व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम है। जो अन्य अकादमिक शिक्षा कार्यक्रमों से बिल्कुल भिन्न है। इस कार्यक्रम के द्वारा विभिन्न स्तरों और विषय वर्ग के अध्यापकों को इस तरह से विकसित करने का प्रयत्न किया जाता है कि वे शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण करने व वहन करने में सक्षम हो सकें तथा ज्ञान एवं

मूल्यों का अगली पीढ़ी में हस्तान्तरण करने में समर्थ हो सकें। इस प्रकार से देखा जाये तो व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्रों में अध्यापक शिक्षा भी व्यावसायिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है तो फिर इससे भी प्रशिक्षुता को पृथक नही किया जा सकता है।

विगत दशक में तैयार की गयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 और न्यायमूर्ति जे.एस.वर्मा समिति की रिपोर्ट 2012 ने अध्यापक शिक्षा में आमूल–चूल बदलाव की पुरजोर सिफारिश की है ऐसी स्थिति में 'नये तरह के विचारों' के जन्म एवं उनका प्रसार विश्वविद्यालयों का दायित्व बनता है। इन आधारों पर एन.सी.टी.ई. द्वारा सरकारी अधिसूचना लाकर वर्ष 2014 में बी.एड. पाठ्यचर्या को द्विवर्षीय घोषित कर दिया गया तथा इसके साथ ही अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। इस द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में न केवल अवधि बढ़ी है बल्कि नये घटकों को सम्मिलित करते हुए अध्यापक शिक्षा को प्रभावी बनाने के दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी उठाया गया। इस द्विवर्षीय बी.एड़ पाठ्यचर्या के अन्तर्गत आवश्यक व्यावसायिक दक्षताओं (EPC) के विकास पर भी प्रमुख रूप से बल दिया गया है। साथ ही सर्वाधिक अभिनव रूप में माध्यमिक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत **'इण्टर्नशिप'** को समाहित किया गया है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी–शिक्षकों को कार्यक्षेत्र संबंधी वास्तविक अनुभव प्रदान करने के साथ–साथ सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष को एकीकृत करने का प्रयास भी किया गया है। इस प्रशिक्षुता कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी–शिक्षकों में व्यावसायिक दक्षता एवं अध्यापकीय प्रवृत्ति विकसित करना, विद्यालयी कार्यस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना एवं उन्हें शिक्षण कौशलों से सम्पन्न बनाना है। **डॉ. अल्तेकर** ने लिखा है कि ''प्राचीन काल में भी शिक्षा का उद्देश्य अनेक विषयों का साधारण ज्ञान करा देना मात्र नहीं था अपितु उसका उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में उच्च कोटि के विशेषज्ञ बनाना भी था।''

अध्यापक शिक्षा में इण्टर्नशिप को जिस उद्देश्य के साथ सम्मिलित किया गया निःसन्देह उसे प्राप्त करने का अधिकतम प्रयास भी किया जा रहा है। परन्तु सतही रूप से इस कार्यक्रम के संचालन में कुछ समस्याएँ भी उभरकर सामने आ रही है जिसे अनदेखा नही किया जा सकता है।

३ समस्याएँ :

किसी भी कार्यक्रम के क्रियान्वयन के बाद उसमें चुनौतियाँ आना भी स्वाभाविक रहता है। इण्टर्नशिप कार्यक्रम के क्रियान्वयन में आने वाली कतिपय चुनौतियाँ एवं समस्याएँ इस प्रकार से हैं–

- इण्टर्नशिप हेतु विद्यालयों में जाने से पूर्व प्रशिक्षुओं को विद्यालयी इण्टर्नशिप संबंधी कोई स्पष्ट दिशा निर्देश नही दिये जाते जिसके कारण इस कार्यक्रम को लेकर प्रशिक्षुओं में भ्रम की स्थिति बनी रहती है।
- विद्यालयों में संसाधनों की कमी एवं विद्यालयी शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षुओं का ठीक प्रकार से अवलोकन न करना इण्टर्नशिप के संचालन में एक चुनौती के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। अर्थात कतिपय विद्यालयी शिक्षकों का प्रशिक्षुओं के साथ असहयोगपूर्ण व्यवहार इण्टर्नशिप कार्यक्रम को प्रभावपूर्ण बनाने में बाधा पहुँचाता है।
- विद्यालयीन इण्टर्नशिप के दौरान अध्यापक शिक्षकों का हस्तक्षेप प्रशिक्षुओं का सहयोगी विद्यालयी शिक्षकों के साथ स्वतंत्र रूप से सीखने के अवसर को बाधित करता है।
- इण्टर्नशिप में प्रशिक्षुओं को आर्थिक सहायता देना उन पर पड़ने वाले अधिगम–व्यय भार को कम करने के लिए व उनके अभिप्रेरणा स्तर को बढ़ाने के लिए आवश्यक है। अतः इस चुनौती पर NCTE एवं शिक्षा विशेषज्ञों द्वारा इसके प्रति विशेष रूप से विचार करना आवश्यक है।
- कतिपय विद्यालयों में प्रशिक्षुओं को शिक्षकों की विभिन्न भूमिकाओं को निर्वहन करने का अवसर प्राप्त न हो पाना भी एक चुनौती है।
- अध्यापक–शिक्षक इण्टर्नशिप संबंधी कार्यभार से ग्रसित है, जिससे कि वे सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम तथा अन्य समसत्र पाठ्यक्रमों (बी.एड.एवं एम.एड.) के बीच सामंजस्य बनाकर चलने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं। इसके अन्तर्गत कई प्रकार की कठिनाईयाँ आ रही हैं यथा– कभी विद्यालय को लेकर या कभी गतिविधियों को लेकर आदि।
- अध्यापक शिक्षकों पर कार्यभार बढ़ा हुआ अनुभूत किया जा रहा है परन्तु वास्तविकता यह है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय अध्यापक शिक्षकों की नियुक्तियाँ ही नहीं कर रहे हैं जबकि एन.सी.टी.ई. के प्रावधान में बी.एड. एवं एम.एड. के अलग–अलग अध्यापक शिक्षक नियुक्त करने का निर्देश है।
- अध्यापक शिक्षकों का प्रशिक्षुओं के साथ पूर्णकालिक रूप में विद्यालयों में रहने के कारण उनके ऊपर कार्यभार एवं व्यय दोनों ही बढ़ गये है एवं इसके लिए उन्हें किसी प्रकार कोई अभिप्रेरक (Incentives) प्रदान करने का कोई प्रावधान भी नही ळें

४ समाधान :

अध्यापक शिक्षा में इण्टर्नशिप के संचालन के दौरान जो गम्भीर समस्याएँ सतही स्तर पर परिलक्षित हो रही हैं उनका समाधान यथा शीघ्र कर देना नितान्त आवश्यक है जिससे इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन और अधिक गुणवत्तापूर्ण एवं समुन्नत तरीके से किया जा सके। उपरोक्त समस्याओं के समाधान से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं का विवरण निम्नलिखित है–

- इण्टर्नशिप के लिए विद्यालयों में जाने से पूर्व शिक्षा विभाग में एक ओरियेन्टेशन का आयोजन किया जाए जिसमें प्रशिक्षुओं को विद्यालयी इण्टर्नशिप संबंधी दिशा निर्देश प्रदान किया जाए। साथ ही साथ उसमें इण्टर्नशिप संबंधी प्रत्येक विद्यालय के मेंटर विद्यालयी शिक्षकों को भी बुलाया जायेगा। जिससे प्रशिक्षुओं के साथ–साथ मेंटर विद्यालयी शिक्षकों को भी इण्टर्नशिप के संचालन संबंधी स्पष्टता एवं स्वयं के उत्तरदायित्व के विषय में जानकारी प्राप्त हो सके। इण्टर्नशिप से पूर्व प्रशिक्षुओं को एक School Internship Programme Dairy भी प्रदान की जानी चाहिए जिसमें इण्टर्नशिप संबंधी व्यापक विवरण हो। जिससे प्रशिक्षुओं में भी इण्टर्नशिप संबंधी की जाने वाली गतिविधियों के सन्दर्भ में स्पष्टता आ सके।
- प्रशिक्षुओं द्वारा इण्टर्नशिप के लिए जाने से पूर्व इस कार्यक्रम से संबंधित समस्त दिशा–निर्देशों की सुनिश्चितता का होना आवश्यक है। अध्यापक शिक्षकों को यह भी ध्यान देना है कि जिस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए प्रशिक्षुओं को सहयोगी विद्यालयों में भेजा गया है। उन उद्देश्यों की पूर्ति करने में सहयोगी विद्यालय कितना सहयोग कर रहे हैं? एवं यदि इण्टर्नशिप के दौरान उनका सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा है तो इसका क्या कारण है?
- अध्यापक शिक्षक इण्टर्नशिप संबंधी गतिविधियों को लेकर बहुत ज्यादा भ्रमित हैं। अतः यह भी आवश्यक प्रतीत होता है कि इण्टर्नशिप संबंधी गतिविधियों के विषय में विश्वविद्यालय अथवा निजी महाविद्यालय द्वारा एक संगोष्ठी की जाये जिससे प्रत्येक महाविद्यालय के इण्टर्नशिप कार्यक्रम में एकरूपता आ सके।
- अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के बीच इस प्रकार का समय विभाजन करें कि जिस समय विद्यार्थी इण्टर्नशिप अनुभव ग्रहण कर रहे हो उस मध्य किसी भी प्रकार के अन्य औपचारिक सैद्धान्तिक पाठ्यक्रमों को नहीं रखा जाये जिससे कि प्रशिक्षु निर्विवाद रूप से इण्टर्नशिप अनुभव प्राप्त कर सकें।
- इण्टर्नशिप एक प्रायोगिक एवं वास्तविक कार्यक्षेत्र से संबंधित अनुभव है जिसके अन्तर्गत प्रशिक्षुओं को कक्षा में सीखे गये सैद्धान्तिक ज्ञान व अनुभव को वास्तविक एवं व्यावहारिक कार्यक्षेत्र में प्रयोग करने का अवसर उपलब्ध हो पाता है। अतः इण्टर्नशिप के दौरान इस बात का ध्यान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है कि इस कार्यक्रम में जो भी गतिविधियाँ समाहित की जाये वे प्रशिक्षुओं के द्वारा प्राप्त किये गये सैद्धान्तिक ज्ञान व अधिगम से संबंधित हों। इस प्रकार के सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान के बीच की भिन्नता को कम किया जा सकता है।
- संस्थाओं/विश्वविद्यालयों द्वारा समय–समय पर अध्यापक शिक्षा में इण्टर्नशिप कार्यक्रम से संबंधित संगोष्ठी, कान्फ्रेस आदि आयोजित करवानी चाहिए, जिसमें अन्य संस्थाओं व सम्बद्ध महाविद्यालयों के अध्यापक शिक्षक सम्मिलित होकर अपने विचार प्रस्तुत करें जिससे यह कार्यक्रम और अधिक समृद्ध एवं समुन्नत हो सके।
- प्रशिक्षुओं को पूर्णकालिक रूप से इण्टर्नशिप अनुभव प्राप्त करने के लिए नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित होने एवं वहाँ पर होने वाली समस्त शिक्षण संबंधी एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों में अपनी सक्रिय सहभागिता प्रदान करने को गम्भीरता से लेने की आवश्यकता है।
- सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों को भी यह भी समझने की आवश्यकता है कि इण्टर्नशिप के दौरान प्रशिक्षुओं को केवल शिक्षण अभ्यास का अनुभव प्रदान करना मात्र ही उनका उत्तरदायित्व नहीं है वरन् सरकारी योजनाएँ क्या–क्या आ रही है, एवं विद्यालय उसमें किस प्रकार अपनी सहभागिता दे रहा है? तथा साथ ही साथ विद्यालय द्वारा प्रशिक्षुओं को यह भी अवगत कराना आवश्यक है कि उनके विद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियाँ क्या–क्या रही? अतः कहने का अभिप्राय यह है कि सहयोगी शिक्षकों को प्रशिक्षुओं में विभिन्न प्रकार की तकनीकी दक्षता एवं नवीन व अन्वेषणात्मक अनुभव प्रदान किया जाना भी आवश्यक है।
- विद्यालय में प्रशिक्षु को इतना अत्यधिक कार्यभार न प्रदान किया जाय कि वह इस कार्य को एक बोझ की तरह समझने लगे क्योंकि ऐसी स्थिति में इण्टर्नशिप कार्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित न हो सकेगा और न ही इसके सभी उद्देश्यों की पूर्ति हो सकेगी।
- प्रशिक्षु प्रतिदिन विद्यालय में इण्टर्नशिप के लिए जाता है यदि उस समय उसे अभिप्रेरक के रूप में कुछ वृत्तिक भत्ता दिया जाये तो वह उसकी आर्थिक सहायता करने में सहायक होगा। साथ ही जो अध्यापक शिक्षक इण्टर्नशिप कार्यक्रम से जुड़े हुए है उनको भी एक निर्धारित (TA) भत्ते के रूप में दिया जाय जिससे उन्हें विद्यालयों पर आने–जाने संबंधी आर्थिक सहयोग प्राप्त हो सके।

- जहाँ एन.सी.टी.ई. पाठ्यक्रम में गुणवत्ता की बात कर रही है तो वही उसे यह भी देखने की आवश्यकता है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय में बी.एड. एम.एड. की निर्धारित सीटों के अनुसार शिक्षक नियुक्त है या नहीं। यदि ऐसा नहीं होगा तो निश्चित रूप से अध्यापक–शिक्षकों का कार्यभार अधिक बढ़ेगा एवं इण्टर्नशिप कार्यक्रम की गुणवत्ता प्रभावित होगी।
- एन.सी.टी.ई. द्वारा समय–समय पर इस कार्यक्रम से संबंधित सेमीनार, रिफ्रेशर कोर्स आदि चलाते रहना चाहिए जिसमें अध्यापक शिक्षा से संबंधित अनुभवी विषय विशेषज्ञों, क्षेत्र विशेषज्ञों आदि का इण्टर्नशिप कार्यक्रम पर व्याख्यान हो जिससे इस कार्यक्रम को और अधिक समृद्ध बनाया जा सके। इण्टर्नशिप कार्यक्रम में अध्यापक शिक्षक कार्यक्षेत्र में जाकर ही प्रशिक्षुओं का निरीक्षण करते हैं, परन्तु इस कार्यक्रम का संचालन ऑनलाइन भी होना चाहिए जिसमें ह्वाट्सप, स्काईप, विडियो–कान्फ्रेसिंग, गुगल ग्रुप आदि उपयोगी हो सकता है।

५ निष्कर्ष :

इण्टर्नशिप कार्यक्रम प्रशिक्षुओं में अपेक्षित प्रवीणता एवं शिक्षण कौशल विकसित कर उन्हें एक निपुण भावी शिक्षक बनाने में सहायक हैं। साथ ही साथ यह भी स्पष्ट है कि अध्यापक शिक्षा में इण्टर्नशिप कार्यक्रम को शामिल किया जाना एक अच्छा प्रयास है। इस प्रकार कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा में इण्टर्नशिप कार्यक्रम नवागत है इसलिए कमियाँ होने की सम्भावनाएँ हो सकती हैं। लेकिन समय के साथ–साथ इस कार्यक्रम को और बेहतर ढ़ंग संचालन का प्रयास भी करते रहना चाहिए।

सन्दर्भः

१ भारत सरकार (1964.66). शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन : शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

२ गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अल्का (2010). *भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ*, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.

३ परवीन, सलेहा एवं निरजा, नाएद (2012). इण्टर्नशिप प्रोग्राम इन एजुकेशन, इफेक्टिवनेस, प्राबलम्स एण्ड प्रोस्पेक्ट्स. *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ लर्निंग एण्ड डेपलपमेंट,* 2 (1), 487–498.

४ करीकुलम फ्रेमवक ऑफ टू इयर्स बी.एड. प्रोग्राम (2014). राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली